Dr. Binay Kumar
Assistant Professor
Psychology Depart.
V.R. College- Rosera

EMOTION

Theories of James-Lange - 1

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन दो वैज्ञानिकों विलियम जेम्स जो अमेरिका के मनोवैज्ञानिक थे तथा कार्ल लांजे जो डेनिस शरीरक्रिया वैज्ञानिक थे। दोनों ने स्वतंत्र रूप से 1884 ई० में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसे "जेम्स लांजे" सिद्धान्त के नाम से जानते हैं। संवेगों के इस सिद्धान्त द्वारा संवेग की जो व्याख्या की गई है। वह सामान्य धारणा के विरुद्ध है। सामान्यतः हम यह मानते हैं कि जब व्यक्ति संवेग उत्पन्न करनेवाले उद्दीपन का प्रत्यक्षण करता है तब उसमें संवेगात्मक अनुभूति होती है और बाद में उससे फिर संवेगात्मक व्यवहार होता है। जैसे - हमलोग बाघ देखते हैं डर जाते हैं इसलिए भाग खड़ा होते हैं। दुश्मन को देखते हैं, क्रोधित होते हैं और फिर उस पर आक्रमण करते हैं। यह सिद्धान्त इसके विपरीत व्याख्या उपस्थित करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक व्यवहार पहले होता है और तब उससे संवेगात्मक अनुभूति उत्पन्न होती है जिसका अनुभव व्यक्ति को होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि संवेगात्मक अनुभूति

Scanned with CamScanner

का होना संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर करता है, संवेगात्मक व्यवहार पहले होता है तथा संवेगात्मक अनुभूति बाद में। कहने का तात्पर्य यह है कि संवेग में संवेगात्मक अनुभूति का होना संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर करता है।

जेम्स लांजे सिद्धांत के अनुसार संवेग की व्याख्या में निम्न चरण सम्मिलित होते हैं।

(i) संवेग की उत्पत्ति के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि ग्राहक या ज्ञानेन्द्रिय उस उद्दीपक का प्रत्यक्षण करे जिसमें संवेग उत्पन्न करने की क्षमता हो। इससे ज्ञानेन्द्रिय में स्नायु प्रवाह उत्पन्न होता है जो मस्तिष्क में पहुँचता है।

(ii) जब स्नायु प्रवाह मस्तिष्क में पहुँचते हैं तब वहाँ से विशेष मार्ग द्वारा अंतरावयव तथा मांसपेशियों में पहुँचते हैं। जब स्नायु प्रवाह अंतरावयव तथा मांसपेशियों में पहुँचते हैं तब उसमें व्यक्ति में शारीरिक परिवर्तन होता है जिससे वह संवेगात्मक व्यवहार कर पाता है। उदाहरण स्वरूप व्यक्ति बाघ देखकर भाग खड़ा होता है या चिल्लाने लगता है।

(14) संवेगात्मक व्यवहार हो जाने के बाद उसकी सूचना से मस्तिष्क को स्नायु प्रवाह के रूप में मिलती है, जिससे व्यक्ति को संवेगात्मक अनुभूति होती है। मांसपेशियों द्वारा होनेवाले कार्य व्यापार (बाह्य शारीरिक परिवर्तन) अंतरावयव द्वारा होनेवाले कार्य की सूचना मस्तिष्क को मिलती है। इस उदाहरण में बाघ को देखकर भाग जाने या चिल्लाने के बाद डर के संवेगात्मक अनुभूति होती है।

जेम्स लांज सिद्धांत की आलोचना —

इस सिद्धांत की कुछ आलोचनाएं हैं जो निम्न हैं।

(1) इस सिद्धांत के अनुसार, शारीरिक व्यवहार या परिवर्तनों के अभाव में संवेगात्मक अनुभूति नहीं हो सकती है। परन्तु आलोचकों का मत है कि संवेगात्मक व्यवहार के अभाव में भी संवेगात्मक अनुभूति होती है। शेरिंगटन ने कई कुत्तों का ऑपरेशन करके मस्तिष्क से शरीर के निचले भाग का संबंध विच्छेद कर दिया जिसके परिणामस्वरूप कुत्तों में संवेगात्मक व्यवहार नहीं हो सकते थे। इन कुत्तों में संवेगात्मक अनुभूति होती पाई गई।

(ii) प्रायः यह देखा जाता है कि एक ही तरह के आंगिक शारीरिक परिवर्तन कई तरह के संवेगों में होते हैं, जैसे - क्रोध तथा प्रेम दोनों ही संवेग में रक्तचाप, हृदय, नाड़ी तथा सांस की गति में वृद्धि हो जाती है। यदि संवेग का अनुभव शारीरिक परिवर्तन या व्यवहार पर निर्भर करता है तो एक ही तरह के शारीरिक व्यवहार से एक ही तरह के संवेगात्मक व्यवहार का अनुभव होना चाहिए था। परन्तु सच्चाई यह है कि एक ही तरह के शारीरिक परिवर्तन से भिन्न-भिन्न तरह की संवेगात्मक अनुभूति होती है जो इस बात का द्योतक है कि संवेगात्मक अनुभूति संवेगात्मक परिवर्तन या व्यवहार पर आधारित न होकर उससे स्वतंत्र है।

(iii) प्रयोग से स्पष्ट हुआ कि आंतरिक अंग अपनी विशेष संरचना के कारण अपेक्षाकृत कम संवेदनशील होते, इसलिए आंतरिक परिवर्तन होने में कुछ समय लग जाता है और संवेग की अनुभूति इससे पहले ही हो जाती है। इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ कि संवेगात्मक अनुभव पहले हो जाते हैं तथा संवेगात्मक परिवर्तन बाद में होते हैं। इस प्रकार से सिद्धांत का

यह दावा कि संवेगात्मक अनुभूति दैहिक परिवर्तन या व्यवहार द्वारा उत्पन्न होता है, सही नहीं दीख पड़ता है।

(iv) अंतरावयव तथा आंतरिक परिवर्तनों एवं उपद्रवों के होने पर भी संवेग का उत्पन्न होना आवश्यक नहीं है। ब्रेडी (Brady) ने एक प्रयोग किया जिसमें एक बंदर की अपानुकम्पी की रीढ़ दी गई जिसके परिणामस्वरूप उसके हृदय की गति, रक्तचाप, सांस की गति आदि में परिवर्तन हो गया तथा हाथ पैर की मांसपेशियों में खून की आपूर्ति बढ़ गई। इन सभी शारीरिक परिवर्तनों के आधार पर बंदर को संवेगिक अनुभूति (क्रोध) होना चाहिए था। परन्तु बंदर में कोई तरह संवेगिक अनुभूति होती नहीं पाई गई। इससे साबित होता है कि संवेग की अनुभूति शारीरिक परिवर्तन पर निर्भर नहीं करती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जेम्स लांज संवेग का कोई ठोस सिद्धांत नहीं है।

END